छठिक डाला

काव्य संग्रह



नन्द विलास राय

छठिक डाला

नन्द विलास राय

पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

ISBN : 978-93-87675-77-3

दाम : ₹ 200/-
सर्वाधिकार © श्री नन्द विलास राय
पहिल संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

CHHATHIK DALA
Anthology of Maithili Poems and Song by Sh. Nand Vilas Roy.

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। कॉपीराइट धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉडिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

स्मृतिमे

देशक आजादी लेल जे
गमेलैन अपन प्राण
भारत केर अस्मिताक खातिर
जिनकर गेलैन जान
जिनकर विचारधारा
अखनो अछि सभसँ आला
हुनका सभक स्मृतिमे
ई अछि पोथी 'छठिक डाला'

-नन्द विलास राय

समरपन

गर्मी हुअए चाहे भीषण जाड़
जाड़सँ दलकैत अछि देहक हार
मुदा जूनून नहि छैन कनीक्को कम
जीब कि मरब तेकर नहि गम
मातृभूमिक रक्षाक लेल केने छैथ
अपन प्राण अर्पण
हुनका सभक लेल 'छठिक डाला'
अछि पोथी समरपन।

-नन्द विलास राय

अप्पन बात

मिथिलांचलक मधुबनी जिलामे भपटियाही गामक एकटा किसान परिवारमे हमर जनम भेल। पिताजी स्व. बच्चा राय मेहनती आ स्वाभिमानी छला। तीन भाँइक भैयारीमे हम सभसँ छोट छी। माए-बाबू बेसी पढ़ल तँ नै रहैथ मुदा नाम-गाम लिखब-पढ़ब अबैत रहैन। हमरा पढ़बैमे माए-बाबूक संग भैयारी सबहक सेहो सहयोग रहल।

नरहिया हाई स्कूलसँ मैट्रिक केला पछाइत निर्मली कौलेज निर्मलीमे नाओं लिखेलौं। किछु दिन निर्मली बजारमे एकटा भाड़ाक कोठरीमे रहलौं पछाइत श्री रामजी प्रसाद मण्डलक घरमे रहए लगलौं। अपनो पढ़ी आ हुनको वालक सभकेँ पढ़ाबी। रामजी प्रसाद मण्डलजी निर्मली कौलेजमे पुस्तकालयाध्यक्ष पदपर नौकरी करै छला। जइसँ रंग-बिरंगक पोथीसँ लगलगाउ रहल। जइसँ छोट-छीन कविता हिन्दी भाषामे लिखए लागलौं। निर्मली कौलेजसँ बी.एस-सी केला पछाइत घोघरडीहा आइ.टी.आइ.सँ टर्नर ट्रेडमे प्रशिक्षण सेहो प्राप्त केलौं।

जखन इण्टरमे पढ़ैत रही तहिए बिआह भऽ गेल। दू बरख पछाइत दुरागमन भेल। पत्नी तरही (नेपाल)सँ आबि भपटियाहीमे रहए लगली। बी.एस-सी आ आइ.टी.आइ. केला पछाइत सरकारी नौकरी लेल प्रयास करए लगलौं। वयस्क एवं अनौपचारिक शिक्षा परियोजना लौकहीमे अंशकालिन पर्यवेक्षक पदपर चयन भेल। मात्र तीन सए टाका मानदेय भेटै छल। तीन सत्र ओ काज केलौं। आशा रहए जे सरकार हमरा सभकेँ नियमित कऽ देत अथवा दोसर कोनो विभागमे देत। मुदा से

किछु ने भेल।

पर्यवेक्षक पदसँ हटला पछाइत संस्कृत उच्च विद्यालय धमौरामे विज्ञान शिक्षक पदपर काजरत् भेलौं। पाँच बरख धरि ओतए रहलौं। काज केलौं। विद्यालयकेँ प्रस्वीकृतिओ भेटल मुदा शिक्षक आ कर्मचारीकेँ वेतनक भुगतान नै भेल। थाकि-हारि हम सभ वर्ग संचालन बन्न कऽ देलौं। भुखे भजन न होइ गोपाला। आखिर केतेक दिन पेटमे जुन्ना बान्हि काज करितौं।

हमर ससुर महराज नेपालक सांसद भेला। हम हुनका लग नेपाल गेलौं। सोचने रही ओतै कोनो व्यवसाय-वेपार करब। कऽ तँ सकैत रही गामोमे मुदा पूजी नै रहने नेपाल गेलौं। ससुरपर आश समीचिन बुझाइत रहए। तीन बरख धरि नेपालमे रहलौं। सासुरमे बेसी दिन रहैबलाकेँ कोन-कोन अपमान सहए पड़ै छै से हमरो सहए पड़ल। मुदा रही लोभमे फँसल तँए नै गुदानिऐ। भेटल तँ किछु नै मुदा तीन बर्खक समए बेरबाद भऽ गेल। जेतेक दिन नेपालमे रहलौं ओतेक दिन हमरा जीवनक कारी अध्यायक रूपमे अखनो बुझना जाइत अछि।

नेपालसँ गाम एला पछाइत, गामे धेलौं। माए-बाबूजी वृद्ध सेहो भऽ जाइ गेल छेला। हिनका सभकेँ छोड़ि दिल्लीओ-पंजाव गेनाइ उचित नै बुझि पबी। तीन बरख पछाइत माए-बाबू एक्के सालक अन्तरालपर स्वर्गवास भऽ गेला। स्थिति आरो बिगड़ि गेल। कोनो अवलम्ब नै देख आने-आन जकाँ दिल्ली विदा भेलौं। दिल्लीओमे रहल नै पार लगल। किएक तँ जाइते बोखार पकैड़ लेलक। डेंगूक हवा बहि गेल रहै। डरे महिने दिन पछाइत गाम चलि एलौं। पत्नीक जेबरसँ आ किछु हथपैंच लऽ नरहिया बजारमे खादक दोकान खोललौं। हलाँकि ओहो नै चलल कारण कम पूजीक चलैत जे समस्या अबै छै तही सभमे लटपटाइत बन्न भऽ गेल।

खेतीवारी सँ थोड़-थाड़ लाट गाममे रहने भऽ गेल रहए जहीपर

धियान दऽ ओकरे पकैड़ अखनो चलि रहल छी।

छात्रे जीवनसँ राजनीतिसँ लगाउ रहल अछि। जय प्रकाश बाबूक आन्दोलनमे सेहो भाग नेने छी। जखन २००१ई.मे बिहारमे पंचायत चुनाव भेल तँ हमहूँ अपना पंचायत छजनासँ पंचायत समितिक सदस्य लेल ठाढ़ भेलौं। जीतलौं। पंचायत विकास कार्यमे पाँच बरख धरि अपसियाँत रहलौं।

पहिनहियेँ कहल अछि जे विद्यार्थीए जीवनसँ किछु-किछु लिखै-पढ़ैक रूचि रहए। से मुदा हिन्दीमे लिखैत रही आ लिखि-लिखि रखैत रही। कहियो प्रकाशन लेल प्रयास नै केलौं। फुलपरास उच्च विद्यालयक स्थापनाक स्वर्ण जयन्ती समारोहमे कवि सम्मेलनक आयोजन भेल रहए। पहिल कविताक पाठ ओतइ केलौं।

१४ अप्रिल २००८ईं.कैं रानीगढ़ी मेला, मझौरामे डॉक्टर अम्बेदकर जयन्तीक अवसरपर श्री जय प्रकाश मण्डल विचार गोष्ठीक आयोजन केने छला। ओही आयोजनमे उमेश मण्डलजी सँ परिचए भेल। विदेह ई पत्रिकाक सम्बन्धमे जनतब भेल। मैथिली रचना प्रकाशनक बाट देखते जेना जोश आबि गेल। तहिएसँ मैथिलीमे छी।

उमेश मण्डल जीक खबरिपर कबिलपुरक 'सगर राति दीप जरए' कथा गोष्ठीमे गेलौं। संयोजक रहैथ डॉ. योगानन्द झा। ओतए बहुतो कथाकारक अलाबे श्री गजेन्द्र ठाकुरसँ सेहो मिलन भेल। गप-सप्प भेल। प्रभावित तँ रहबे करी जे आरो प्रभावित भेलौं। वास्तवमे, आधुनिक मनुखक माने सभ्य मनुखक जे चालि-बेवहार हेबाक चाही से हुनकामे देखलौं। पहिल कथा गोष्ठी छल। पैघ-पैघ साहित्यकार सभ रहैथ। जहिना चन्द्रमाक सामने भगजोगनी रहैत तनाहियेँ हम हुनका सबहक सोझहामे छेलौं। भोरहरबामे कथा पाठक समए भेटल। कथाक शीर्षक रहए- 'जे विद्वान से बेइमान।' समीक्षक लोकैन कथापर टिप्पणी नै कऽ

शीर्षकपर अड़ि गेला। ओना किछु गोरे शिल्पक तँ किछु गोरे बनाबटि तँ किछु गोरे अकारपर सेहो किछु शब्द रखलखिन मुदा विषय-वस्तुपर सेहो नहि। बड़बढ़ियाँ, कथाक पाठक अवसरसँ जोश बढ़ल। आरो-आरो गोष्ठीमे जाए-आबए लगलौं।

श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक गामक जिनगी पोथी कबिलपुरमे लोकापर्ण भेल। एक प्रति हमरो भेटल। चौथा-पचमामे पढ़ै छेलौं तँ गणीतक कुंजी देख-देख हिसाब बनाबी। तेनाहियेँ आइ कथा लिखैमे गामक जिनगी बुझाइए। एकटा गुरुक काज दऽ रहल अछि।

पोथीक मादे-

ओना तँ 'छठि' पाबैन दुनियाँक अनेको भूभागमे मनौल जाइत अछि जैठाम कि हिन्दू संस्कृति अछि। मुदा मिथिलामे मनौल जाइबला पाबैनमे छठिक बड्ड महत्व अछि। ओना तँ ई पर्व सभ वर्गक लोक मनबैत अछि मुदा मुख्यत: ई पर्व किसानक छी। किसानक बनौल नवका गुँड़े छठि पाबैनक खरनाक नेवेद्यक खीरमे देल जाइत अछि। पाबैनक लेल जे ठकुआ आ भुसबा बनैत अछि तहूमे गुड़ेक उपयोग होइत अछि। किसानक उपजौल केरा, कुसियार, टाभनेबो, नारियलक फल, सेब पात लागल आदी, हरदी, सूथनी, औरबी, सिंगरहार, सजमैन, मूर आ भाँटा इत्यादि डालामे रखि भगवान भास्करकेँ हाथ उठौल जाइत अछि। हमहूँ एकटा छोट-क्षीण किसान छी आ मैथिल छी। मिथिलाक संस्कृतिकेँ अक्षुण्ण राखए लेल संवेदनशील छी तँए हमर पहिलुका दूटा पोथी (कथा संग्रह) जे प्रकाशित भऽ चुकल अछि, ओहो दुनू गोट पोथीक नाओं मिथिलाक संस्कृतिपर आधारित अछि, क्रमश: 'सखारी-पेटारी' आ 'मरजादक भोज', पहिल 2013 इस्वीमे आ दोसर- 2018 इस्वीमे। संगे, प्रस्तुत काव्य संग्रह 'छठिक डाला' सेहो मिथिलाक मुख्य लोक पर्व

'छठि'क नाओंपर रखलौं हेन।

जहिना छठिक डालामे विभिन्न तरहक पकवान-मिष्ठान, फल-फलहरीक संग साग-सब्जी आदि रखि भगवान सूर्यकेँ अर्घ्य देल जाइत अछि तेनाहिये ऐ कविता संग्रहमे भाँति-भाँतिक कविता आ गीत लिखि अपने लोकनिक आगू अर्घ्य दए रहल छी।

ई तँ अपनहि लोकैन तय करब जे छठिक डालामे सजल पकवान, फल, सब्जी आ मिठाइ रूपी कविता आ गीत केहेन अछि, केहेन लागल। सुधी पाठकक रूपमे अपनेक की विचार अछि, एकर हम प्रतीक्षा करब। कृपा कऽ फोनसँ अपन विचारसँ अवगत कराबी।

पोथी लिखलाक बाद आर्थिक समस्या उत्पन्न भेल। पहिनहि कहने छी जे हम छोट-क्षीण किसान छी। जेना-तेना परिवारिक गाड़ीकेँ खींच रहल छी। मैथिली भाषामे लिखल पोथीक खरीदवालो नहियेँ अछि। पहिल जे दूटा पोथी प्रकाशित भेल ओहो ओहिना अछि। किछु विद्वान लोकैनकेँ भेँट स्वरूप देलिऐन, मुदा ओ सभ पढ़ला कि नहि से आइ धरि नै बुझि सकलौं। किएक तँ कियो विद्वान आइ धरि पोथीपर अपन विचार ने लिखित रूपमे आ ने मौखिक रूपमे व्यक्त केलैथ। आओर तँ आओर जे मैथिलीक आलोचक लोकैन छैथ सेहो अपन मुँह बन्ने केने छैथ। खाएर जे से...।

हँ, तँ पोथी प्रकाशनक गप्प कहैत रही। हम अभारी छिऐन सी.एम.बी.कॉलेज ड्योढ़ घोघरडीहाक हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. धीरेन्द्र कुमार रायजीक, जिनकर आर्थिक सहयोगसँ ऐ पोथी प्रकाशनक बाट प्रशस्त भेल। प्रो. धीरेन्द्र बाबू हमरा छोट भाए मानि सभ दिन सिनेह दैत रहला हेन। आशा अछि ई सिनेह आगूओ अहिना बनल रहत। प्रो. धीरेन्द्र बाबूकेँ शत्-शत् नमन।

पोथी प्रकाशनमे श्री नारायण यादव पूर्व प्र.अ.उ.वि. जयनगर सेहो

सहयोग केलैन, हुनका बहुत-बहुत साधुवाद।

श्री उमेश पासवानजी छैथ तँ ग्रामीण पुलिस (चौकीदार) मुदा साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कारसँ सम्मानित भेला हेन, हुनको सहयोग भेटल। श्री पासवानकेँ बहुत-बहुत धैनवाद।

पोथी प्रकाशनमे जिनक अहम भूमिका छैन ओ छैथ श्री उमेश मण्डलजी। आइ जेतए हम ठाढ़ होबए लेल परियास कए रहलौं हेन तइमे सभसँ अहम भूमिका हिनके अछि। हम 'ए-प्लस बी होल-स्कवाइर बराबर ए-स्क्वाइर प्लस-टू-ए-बी प्लस बी-स्क्वार' बला लोक रही। यानी हम विज्ञानक छात्र रहलौं। साहित्यसँ हमरा दूर-दूर धरि सम्बन्ध नइ रहल अछि। मुदा उमेश मण्डलजीक संसर्गमे एलासँ आइ हम छोट-क्षीण आलेख, कथा आ कविता लिख रहल छी। प्रस्तुत पोथीक प्रकाशनमे ओ मात्र आर्थिके सहयोग नहि, अपितु मानसिक आ शारीरिक रूपसँ सेहो सहयोग केलैन। हुनका कोन शब्दसँ धैनवाद दिऐन ओ शब्द हमरा शब्द कोषमे नहि अछि।

श्री दुर्गानन्द मण्डलजी बरबैर हमरा लेखनीकेँ गति देबाक लेल उत्साहित करैत रहला हेन, तइ लेल हुनका बहुत-बहुत धैनवाद। तैसंग निर्मली महाविद्यालयक हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. शिव कुमार प्रसाद आ निर्मली महाविद्यालय निर्मली- सुपौलक पर्वू प्राचर्य डॉ. प्रो. विमल कुमार राय सेहो हमर मनोबलकेँ बढ़ैबत रहला, दुनू विद्वतजनकेँ बहुत-बहुत साधुवाद।

जहियेसँ मैथिली लिखनाइ शुरू केलौं श्री गजेन्द्र ठाकुरजी मोबाइलपर मार्गदर्शन करैत रहला अछि। हमरा सभ लेल जहिना आशाक किरण छैथ तहिना आगूओ रहता से विश्वास हृदयमे जमि गेल अछि। श्री गजेन्द्रजीकेँ कोटि-कोटि साधुवाद।

साहित्य सम्राट श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, हिनक आर्शीवादसँ

आइ हमरा एकटा छोट-क्षीण कथाकार आ कविक रूपमे पहचान भेटल, हुनका शत्-शत् नमन।

पल्लवी प्रकाशनक श्रीमती पुनम मण्डलकेँ हार्दिक धैनवादक संग उज्जवल भविष्यक कामना अछि। बरमहल प्रोत्साहित करएबला साहित्यकार श्री ओम प्रकाश झा एवम् शुभेक्षु श्री रामजी प्रसाद मण्डलजीक सेहो आभारी छी। हुनका लोकैनकेँ साधुवाद।

श्रीमती आशा देवी उर्फ बेबी, प्रो. उपेन्द्र नारायण राय- व्याख्याता गणित विभाग, महिला कॉलेज बेगूसराय, डॉ. योगानन्द झा- समालोचक, श्री शम्भुनाथ मिश्र, अध्यक्ष कोसी विकास समिति, हटनी, श्री राजनन्दन लाल दास, सम्पादक कर्णामृत, श्री चन्द्र मोहन कर्ण सम्पादक देसिल वयना, श्री राजदेव मण्डल साहित्यकार, समाजसेवी श्री बिनोद कुमार साह, आपका दवाखाना- निर्मली, हिनका सबहक सिनेहकेँ सेहो नहि बिसरल जा सकैत अछि। आशा अछि जे हिनका लोकनिक सिनेह सदैत बनल रहत। अत: हिनका सभकेँ बहुत-बहुत धैनवाद।

श्रुति प्रकाशनक श्रीमती नीतू कुमारी आ श्री नागेन्द्र कुमार झाजीक सभसँ बेसी आभारी छी जे हमर पहिल पोथी- 'सखारी-पेटारी' केर प्रकाशन केलैन। हिनक उपकार हम नहि बिसरब किएक तँ ओइ पोथीक प्रकाशनक पछाइत जे हमर मनोबल बढ़ल ओ केना बिसैर सकै छी। ऐ लेल दुनू बेकतीकेँ बहुत-बहुत साधुवाद।

नन्द विलास राय

भपटियाही (सखुआ) मधुबनी

तिथि : 14 सितम्बर 2018

मो. 9931909671

काव्य क्रम-

जय हो श्री गणेश

जिनका भेटै छैन
पार्वतीक प्यार
ओ भेले शंकरक दुलार
दुनियाँमे जिनकर
भक्त छैन भरमार
सभ देवमे जे छैथ न्यारा
जिनकर कियो ने छैन
देखएबला
तिनकर वएह छथिन
एकमात्र सहारा
हरै छैथ जे सबहक
दुख आ क्लेश
जय हो श्री गणपतिजी
जय हो श्री गणेश।

पीताम्बरधारी
मूसक सवारी
माए-बापक पुजारी

पहिल पूजाक अधिकारी
जे कहबै छैथ देवेश
जय हो गणपतिजी
जय हो श्री गणेश।

लम्बोदर, विघ्नहरण
चारि हाथ, दू चरण
एकदन्त, दू नयन
एक भाइ गजानन
एक भाइ षड़ानन
गौरा पुत्र, महादेवक नन्दन
सदा बसै
सन्तनकैं मन्दिर मन
पिता कहाबए महेश
जय हो गणपतिजी
जय हो श्री गणेश। ❑

सरस्वती वन्दना

सरस्वती माता हे
किएक ने दइ छी हमरोपर
कनियोँ धियान
एक नजैर हमरा दिस तकियौ
करियौ हमर कल्याण
सरस्वती मैया हे...।

मृगतृष्णामे हम भटकै छी
जेतए जे सुतैर गेल
से झटकै छी
तेना स्वार्थमे
आन्हर बनल छी
भ्रष्टाचारक दलदलमे फँसि कऽ
अपनो कऽ बुझै छी आन।
सरस्वती मैया हे..।

हम मूरख, लोभी, अधर्मी
चरित्रहीन, कपटी, कुकर्मी

कनियोँ नहि अछि ज्ञान।
सरस्वती मैया हे...।

मानव बनि धरतीपर एलौं
जे नै करैक छल
सेहो सभ केलौं
दानबबला कर्म करै छी
भऽ गेलौं शैतान।
सरस्वती मैया हे...।

जे माए-बाप जनम हमर देलक
पालि-पोसि कऽ पढ़ेलक-लिखेलक
हुनका सभक सेवो ने केलौं
केहन भेलौं हम बेइमान
सरस्वती मैया हे...।

महल-अटारी बहुत बनेलौं
मानवता केर सेवा नै केलौं
केलौं ने कहियो दान।
सरस्वती मैया हे...।

अधला काजक अधला फल होइ छै

ई बात हम खूब बुझै छी
बुझियो कऽ छी अनजान
सरस्वती मैया हे...।

हाथ जोड़ि विनती करै छी हे मैया
अहाँ छी दयावान
हमरा सद्-बुद्धि दिअ
हे मैया
आओर दिअ सद्ज्ञान
मृगतृष्णासँ हम निकैल कऽ
बनिऐ नेक इंसान
सरस्वती मैया हे
कनियोँ दियौ हमरोपर
धियान।
एक नजैर हमरा
दिस तकियौ
करियौ हमर कल्याण। ❑

अछैत बेटा निपुत्तर

पेट पीठमे सटल
कपड़ा ठाम-ठाम फटल
केश-दाढ़ी बढ़ल
डाँर सेहो झुकल
गाल पचकल
आँखि धँसल
बिनु ठेंगा
नइ होइत रहैन चलल
छातीक हार
झक-झक देखाइत
देह कँपैत
दमाक रोगी जकाँ हँफैत
अँगने-अँगने भीख मंगैत
मुहसँ कहैत
मलिकाइन किछ दअ
दियौ निपुतराहाकेँ
मास-दू मासपर अबैत
आ यएह बात बजैत...।

हम जलखै खा, खेलौं पान
आ जाइत रही दलान
तखने ओ डेढ़ियापर आएल
आ देलक अवाज
मलिकाइन किछु दअ दियौ
निपुतराहाकेँ।

तैपर हमर पत्नी बजली
ऐ भिखमंगाकेँ कनिक्को
नहि होइ छै लाज
से नहि होइ छै
जे करतै केकरो कोनो काज।

पत्नीक बात सुनि
हम भिखमंगा दिस ताकि
देखलौं ओकर काया
ओकर देह-दशा देख
लागल हमरा बड्ड माया।

हमरा मनमे भेल
किए नहि सुनिऐ

भिखमंगाक बेथा
अपनाकेँ निपुतराहा
किए कहैत अछि
की छै ओकर जीवनक कथा।

की गामसँ भगा देलकै
ओकरा समाज।
की वास्तवमे नै छै ओकरा बेटा
आकि छै ऐमे कोनो राज?

हम ओकरा दलानपर लऽ गेलौं
बड्ड आदरसँ जलखै करेलौं
पछाइत ओकरासँ पुछलिऐ
'बाबा, अहाँ अपनाकेँ किए
कहै छी निपुतराहा
की नइ अछि अहाँकेँ बेटा?

हमर बात सुनि
ओकरा आँखिसँ
गिरए लगल दहो-बहो नोर
हमरो लागि गेल बुकौर।

बाबा जुनि कानू
कनलासँ नहि हएत
समस्याक निदान
ई कहैत आरो
देलिऐ बोल-भरोष
हमरा बातसँ भेलै
ओकरा बड्ड संतोष।

बौआ चारि बेटा रामकेँ
एको नहि काम-केँ
बौआ हमर नाम
छी राम परसाद
आ घर अछि लदनियाँ
जहिये पत्नी मरल हमर
तहिये अन्हार भऽ गेल
हमर सौंसे दुनियाँ
बौआ हमरो छल
चारिटा बेटा
जमीन-जत्था बेच
सभकेँ पढ़ेलौं
पढ़ा-लिखा कऽ
मनुख बनेलौं

चारू बेटा नौकरी करैए
सभ अपन परिवारक संग
बाहरे रहैए
मुदा हमरा कियो ने देखैए
हमर पत्नी जे कमा कऽ
मास दिन पहिने ओ
खुआबै छेली
भगवानक घर चल गेली
मुदा हमरा भीख मांगऽ
लेल छोड़ि गेली।

बौआ, जेठका बेटा
अपन सासुक मृत्युपर
केलक रसगुल्ला-लालमोहनक भोज
मुदा माए-बापक नहि
कहियो केलक खोज।

दोसर बेटा सारिक बिआहमे
लाख टका खर्च करि
केलक कन्यादान,
मुदा ओहो नहि कहियो देलक
हमरा सभपर धियान।

तेसर बेटा अपना सारकेँ
पूनामे एमबीए पढ़बै छै
सुनै छिऐ दस हजार टका
मासे-मास पठबै छै
सभसँ छोटका बेटा अछि
पत्नीक बड़का भक्त
हमरा जे चिट्ठियो लिखैत
सेहो ने भेटलै वक्त।
सासु-ससुरकेँ संगे राखि
करैत अछि पतिपाल
एम्हर बाप भीख मंगै छै
तेकर नहि छै कनिक्को खियाल।

हम पुछलिऐ
की अहाँकेँ नै अछि बेटी
तैपर ओ बाजल
बेटी अछि
वएह तँ केलक
माइक क्रिया-करम
भगवान नीक करथुन ओकरा
ओकरे भेलै सभसँ
पैघ धरम, बेसी धरम।

फेर पुछलिऐ-
बेटीए ओइठाम किए ने
जा कऽ रहै छी
गामे-गाम भीख किए
टहैल-टहैल मंगै छी?

तैपर ओ बाजल-
बेटीक दुआरिपर रहबकैं
हम करवनो नै बुझै छी नीक
तइसँ बढ़ियाँ गुजर करै छी
मांगि-चाँगि भीख। ❑

मानवता

आनक गलती निङ्घारब ई नीक काज नै
करवनो काल अपनो मुँह ऐनामे निङहारल करू
जँ दानवसँ मानव बनबाक अछि
मानवबला कर्त्तव्य निभाएल करू।
जीत केर खुशीमे सभ रहैत अछि मगन
हारिक दुखीमे अहाँ मुस्कुराएल करू
दोसरक खुशी देख जरै छी किएक

देख दोसरक तरक्की मरै छी किएक
हएत केना अप्पन तरक्की विचारल करू
की लऽ दुनियाँमे एलौं, की लऽ कऽ दुनियाँसँ जाएब
फेर एना किए करै छी राति-दिन बाप-बाप
ढौआ कमाबए लेल केलौं ने जानि कतेक पाप
जँ पापसँ मुक्ति चाहै छी अहाँ
गरीब-गुरबापर अन्न-धन लुटाएल करू
दोसरक खुशी लेल जँ जीत कऽ हारि सकी
आनक बचेबाक खातीर घर अपन जारि सकी
धरतीपर केना मानवता जीबैत रहत
अपना भरि अहाँ जुक्ती लगाएल करू
अपना लेल तँ सभ जीबैत अछि
अनका लेल जँ अहाँ जी सकी
आनक उपकार खातीर जँ जहर पीब सकी
मरियो कऽ केना लोक भऽ जाइत अछि अमर
अहू गप्पपर थोड़ैक माथ लगाएल करू
आनक गलती निङ्हारब ई नीक काज नै
कखनो काल अपनो मुँह ऐना निङ्हारल करू। ❑

शिक्षित बेरोजगार

हम शिक्षित बेरोजगार छी
परिवारपर बनल भार छी
गौआँ समाजक लेल बेकार छी

हम शिक्षित बेरोजगार छी।

बाबू हमरेपर भाषण झाड़ै छैथ
आ गप्पसँ हमरा मारै छैथ
हम मने-मन भनभनाइत छी
आ गप्प मारि खाइत छी।
हमर कनियाँ हमरासँ रूसल अछि
ओ कहै अछि, हमर कपारे फूटल अछि।
की एक गद्दी सेनुरो देलौं
जहियासँ गौना भऽ अहाँ घर एलौं
की तेलौ सावुन अहाँकेँ
हमरा लेल जुमैत अछि।
की कहूँ भाय लोकैन
हमरा तँ किछु ने फुड़ैत अछि।
कोर्ड़ाक मारिसँ बेसी चोट लगैत अछि
कनियाँक बातक हमरा
के पतियाएत अपन दुख
हम कहियौ ककरा
कनियाँक बापो
अपन बेटी हमरासँ बियाहि
पचताइत अछि
दिल्ली, पंजाब पठेबाक लेल
हमर माथ खाइत अछि।
आब नै गूजर हएत हमरा गाममे
चलि जाएब दिल्ली आइये साँझमे

ओतए करब कोनो काम
ढौआ कमा, लाएब गाम। ❑

कन्याँदान

हम छी बड्ड परेशान यौ बाबू
हम छी बड्ड परेशान।
हमरा माथपर लादल अछि
तीन-तीन कन्याँदान।

खेत-खरिहाँन बेचि
जेकरा पढ़ेलौं
पढ़ा-लिखा कऽ
मनुक्ख बनेलौं
ऊहो भऽ गेल विरान।
राति-दिन एतबे
सोचैत रहै छी
केना बचत हमर मान
हमरा माथपर लादल अछि
तीन-तीन कन्याँदान।

आइक युगमे बेटी बिआहब
रहि नै गेल आसान।

ओकरा लेल तँ पहाड़ बनल अछि
जे छैथ कोनो किसान
मनमे घुरिआइत रहैत अछि
केना हएत ऐ समस्या केर निदान।
डर रहैए हरिदम मनमे
इज्जत ने हुअए नीलाम
जेकरा-जेकरा अप्पन बुझैत छलौं
सभ भऽ गेल आन।
आँखिक सोझहा नचैत रहैत अछि
बेटी तीनू जवान
हमरा माथपर लादल अछि
तीन-तीन कन्याँदान।

दहेज खातिर
मानव भऽ गेल दानव
के पोछत हमर नोर
हम केकरा लग कानब
सबहक हृदए भऽ गेल कठोर
विद्वानो सभ भऽ गेल बेइमान
हमरा माथपर लादल अछि
तीन-तीन कन्याँदान।

जहियासँ बरतुहार गेल आपस
हमर कनियाँ धऽ लेली ओछान।
वर खोजैत-खोजैत

चप्पल हमर घँसि गेल
पड़लौं हम बेराम।
हमरा माथपर लादल अछि
तीन-तीन कन्याँदान।

एहेन मनुक्ख आइ धरि नै भेटल
जे करत हमरापर उपकार
बिना दहेजक बेटा बिआहि कऽ
हमरा माथसँ उतारत भार।
एहेन मनुक्ख जँ हमरा भेटता
जे करता एहेन शुभ काम।
पाग-दोपट्टा-मखानक मालासँ
हुनकर करब हम सम्मान।
जखन-जखन करब हुनक दर्शन
बुझब केलौं गंगा स्नान
बुझब केलौं गंगा स्नान। ❑

वेपार

एक दिन हमर कनियाँ बजली-
"यौ, पढ़लौं-लिखलौं
मुदा नै भेल कोनो नौकरी

तँ अहिना रहब बेकार,
किएक नै शुरू करैत छी
कोनो छोटो-क्षीण वेपार,
हे! कहाबत छै
जे ने करए कपार
से करए बेपार।”

हम कहलयैन-
“पूजी केर केना हएत जोगार?”

ओ बजली-
“हम नैहरसँ आनि देब टका
पच्चीस-पचास हजार
तहीसँ शुरू कए लेब
कोनो छोट-मोट रोजगार।
जँ परिस्थितिसँ
अखन जाएब हारि
तँ अबैबला धिया-पुता
देत अपना सभकेँ गारि।”

हम कहलयैन-
“अहाँक बड्ड नीक अछि विचार
जल्दीसँ नैहर जाउ
आ ओतएसँ ढौआ मांगि लाउ।”

भरि दउरा सनेस लऽ
ओ नैहरा गेली
भोरे बैरंग आपस एली।
हम पुछलयैन-
“की यै, भऽ गेल ढौआक जोगार?”

हमर कनियाँ बजली-
“हम बाबू-मायसँ कहलयैन
हमरा किछु टकाक अछि दरकार
सोचैत छी शुरू करैले कोनो बेपार।
ओ सभ बजला,
हम अपने छी लाचार
कतएसँ देब तोरा
टाका पच्चीस-पचास हजार।”

हम कहलिऐ-
“ओ सभ छथिन अमीर
हम सभ छी गरीब
अमीरकेँ कहिया
गरीबसँ रहलैन सरोकार।”
आगाँ कहलिऐ-
हे अपना दुनू गोरे
मिलकऽ एकटा कोचिंग चलाउ

ओइसँ जे आमदनी हएत
किछु खर्च करू आ
किछु भविस लेल बँचाउ। ❑

भोँट

पंचायत चुनावक पकड़ने छल
प्रचार-प्रसारक बड्ड जोर
सभ चौक-चौराहा पर छल
रेडीक अवाजक शोर।

बैसल रही हम अपन दलानपर
चुनावक सरगर्मी रहए उफानपर
ताबेतमे हमर हरबाहा
जकर नाम अछि मंगला
देखबा-सुनवामे तँ ओ
बुरिबक लगैत अछि
मुदा अछि बड्ड चंगला।

आएल ओ कहलक-
"गिरहत कनी खैनी दिअ।"

हम खैनीक डिब्बी दैत कहलिऐ-

“चुनाबह, अपनो खाह
आ हमरो खुआबह।”

ओ खैनी चुनौलक
हमरो दिस बढ़ौलक
हम एक जूम खैनी
ठोर तरमे लेलौं।
आ पुछलौं-
“कहऽ मंगल
की छअ समाचार
भोँट केकरा-केकरा दइले
करैत छहक विचार?”
ओ बाजल-
“की कहू गिरहत
किनडीडेट सभ
ने दिन बुझैए
ने राति बुझैए
आ जखैन-तखैन
भोँट मंगैले
चलि अबैए।”

हम कहलिऐ-
“आन पदक कण्डीडेट सभमे तँ
करए पड़तह विचार

मुदा सरपंचमे
मांगैन दिआदे छह ठाढ़
आदमियो नीक अछि
अनकासँ ठीक अछि।"

ओ बाजल-
"की कहलिऐ गिरहत
दिआद?
यौ ओ आदमी बड्ड सठ अछि
की कहब, एकदम गिरहकट अछि
परसाल हमर बकरी
उखरि कऽ ओकर चारिटा गाछ
खाए लेने रहए कोबी
तइले बिखनि-बिखनि कऽ
गारि देने रहए हमरा
ओकर मौगी
ओकर गारिक
लागल अछि
हमरा बड्ड चोट
हम ओकरा
किन्नौं नहि देब
अपन भोँट।"❑

किसान

हम भारतक किसान छी,
वेवस, बेजान छी
सरकारक लेल बीरान छी
मुदा देशक परान छी
हम भारतक किसान छी।

हम बासमती उबजाबै छी
हम घी उत्पादन करै छी
कोबी, गाजर, टमाटर
तीमन-तरकारी संग
गुलाबरवास सपेता उपजाबै छी
मुदा हमरा अछि भोग कहाँ?
हम करै छी उपयोग कहाँ?
हम खाइ छी
कहियो नून-रोटी
तँ कहियो साग-भात
जे खाइ छैथ बासमती चाउरक भात
आ मुर्गा-खस्सीक मासु
से करै छैथ हमरे आघात।

नेता होथि वा हाकिम-हुकुम
सभ पीबै छैथ हमरे खून
तबैत रौद हुअए वा ठण्ढा वसाति
हम खटै छी दिन आ राति
हमरा नहि अछि करवनो चैन
हम रहै छी हरिदम बेचैन।

कहियो रौदी तँ कहियो बाढ़ि
हमरा दैत अछि आर्थिक मारि
महाजनक सुनऽ पड़ैत अछि गारि
हमरा संग अछि बड्ड लचारि।

हम फड़फड़ाइ छी अहाँ मुस्कुराइ छी
देखकऽ हमर बेथा यएह छी हमर कथा।

के करत के हरत हमर दुख
कहिया हम देखब सुख
केना हएत हमर कल्याण
के फूकत हमरामे जान
लोक कहैत अछि, किसान धरतीक भगवान छी
मुदा वेवस छी वेजान छी

देशक परान छी

हम भारतक किसान छी। ❑

नेताजी

नेताजी चुनाव जीत गेला
पौने पाँच बरख धरि
चैनक नीन लेला।

अगिला चुनावमे
फेरो ठाढ़ भेला
जनताक बीच गेला।
जनता पुछलकैन-
"अहाँपर केना करी बिसवास
कहाँ भेल क्षेत्रमे
कोनो विकास?"

नेताजी कहलखिन-
"विकासे विकास अछि
पहिने हमरा घरमे
जरै छल डिबिया
आब बिजलीक प्रकाश अछि

बुझू एकदम झकास अछि।
हमर बेटा जेकर
नाओं विकास छी
ओ पढ़ैत छल
गमैया स्कूलमे
आब पढ़ैत अछि
देहरादूनक कन्वेन्टमे
हम लागल छी
ओकर हर तरहेँ
इम्प्रूभमेन्टमे
ओ पानिकेँ कहैत अछि वाटर
आ खेनाइकेँ लंच
हमरा बुझना जाइत अछि
ओकर अंग्रेजी
भऽ गेल अछि
बड्ड टंच।
फुसि नै बजैत छी
करू हमरापर बिसवास
हमरा विकास बेटाक
भेल खूब विकास।
आओर सुनू,
मुदा नेता हमरे चुनू।

पहिने हमरा रहैक-ले
बकरियो घर ने छल
पीबैले नै छल
एकटा चप्पोकल
अहाँ सबहक कृपासँ
आब अछि
तीन-तीनठाम
आलीशान मकान
फ्रिजक मिनरल जल
पीबै छी
मुदा अपनोकेँ बुझै छी आन
चढ़ैले नै छल
एकटा कटही साइकिलो
आब अछि भी.आइ.पी,
ए-सी बला मोटर गाड़ी
गाड़ीमे चलै छी
तँ लोक हमरो बुझैत अछि
नेता बड़का भारी।

पहिने अठन्नियो, चौअन्नियो
नै रहैत छल जेबीमे

आब हजरिया, पनसैयाक
रहैत अछि गड्डी
दस-टकहिया, पँच-टकहियाकेँ
तँ बुझैत छी
आब हम, कागज रद्दी
पहिने मुरही-कचरीक संग
कखनो-काल पीबै छेलौं ताड़ी
आब रोज पीबै छी
भूजलाहा काजूक संग
इंग्लिश वाइन
जइसँ रहैत अछि
हमर मूड एकदम फाइन।

पहिने बसैले नै छल घराड़ी
खाइ छेलौं,बेसाह-उधारी
आब अछि फर्म हाउस आलीशान
खाइत छी
सभ दिन नव-नव पकवान
यौ, हमरा क्षेत्रक जनता महान
अहाँ सभ छी
हमरा-ले अखन, साक्षात भगवान
करू अपन अमूल्य भोँटक

हमरे दान
जइसँ हमर हएत
भाग्यक निर्माण
जँ जीत गेलौं
हम एमकी
तँ बनाएब
हम अपन खास पहचान।

पटना, दिल्ली, कलकतामे
तँ घर भाइये गेल अछि
मुम्बइ, चेन्नइमे
कीन लेब आलीशान मकान
आब होइ छी विदा
किएक तँ जेबाक अछि
हमरा केतेको गाम
अहाँ सभकेँ
बहुत-बहुत प्रणाम।” ❑

हमर सपनाक बिहार

दैहिक, दैविक, भौतिक ताप
सपनाक बिहारमे
कहियो ने व्याप।
राष्ट्रपति होइथ
वा होइथ भंगीक सन्तान
सभकेँ शिक्षा भेटए
एक समान।

उन्नत खेती हुअए
हुअए खुशहाल किसान
शहरसँ सुन्नर
हुअए गाम।

सभसँ नीक हुअए खेती
बेटासँ बढ़ि कऽ
हुअए बेटी।
सभकेँ भेटए
रोटी, कपड़ा आओर मकान

सभ खेतकैं पानि भेटए
आ सभ हाथकैं काम।

केतौ केकरोपर ने
हुअए अत्याचार
कोनो स्तरपर ने
हुअए भष्टाचार।

निष्ठापूर्वक सभ करैथ कर्म
मानव जातिआ
मानव धर्म।

आतंकवाद केर नै
सुनी नाम।
सभ करैथ
इमानदारीपूर्वक काम।

दुनियाँमे बढ़ए
बिहारक मान
आर भेटए
बिहारीकैं सम्मान। ❑

नैतिकता आ इमान

खेत बेच देब
खलिहान बेच देब
तइसँ काज नै चलत
तँ मकान बेच देब।

जमीन बेच देब
आसमान बेच देब
अपन आ परिवारक
समुच्चा अरमान बेच देब।

मान बेच देब
सम्मान बेच देब
मानवताक रक्षा खातिर
कीमती समान बेच देब।

आन बेच देब
शान बेच देब
वतनक लेल हम

अपन पराण बेच देब।

बचनक लेल अर्जित
पहचान बेच देब
हरिश्चन्द्र जकाँ
अपना संगे
पत्नी आओर
सन्तान बेच देब।

मरियो जाएब
या मिटियो जाएब
केतबो बच्चा नोर बहाएत
वा पत्नी रूसि कऽ
नैहर जाएत
मुदा ढौआ खातिर
की अपन
नैतिकता आ इमान बेच देब? ❑

नदी गीत

नदी मैया हे
करियौ दुनियाँक कल्याण।
हाथ जोड़ि हम विनती करै छी
करै छी दण्ड परनाम।
नदी मैया हे
करियौ...।

केतौ सतलज केतौ ब्रह्मपुत्र कहबै छी
केतौ गण्डकी, केतौ वागमती
केतौ कोसी, केतौ जमुना, सरोसती
पाप नाशनी, गंगा केर महिमा
केना करू बखान।
नदी मैया हे
करियौ...।

केतौ तिलजुगा, केतौ बिहूल मैया
केतौ गहुमा, केतौ जीबछ धार
कलकत्तामे हुगली गंगा बहै छथिन

जइ रस्ते होइए पैघ बेपार
केतौ कहबैत कमला माता
बड्ड उकपाती भूतही बलान।
नदी मैया हे
करियौ...।

अहाँक जलसँ खेती होइए
आओर होइए बिजलीक निरमान
अहाँक जलसँ पूजा-पाठ होइए
आओर होइए पैघ-पैघ अनुष्ठान।
नदी मैया हे
करियौ...।

अहाँ तँ गुणक पैघ भण्डार छी
अहाँ धरतीपर आनएबला वहार छी
केतौ नदी, केतौ कहबै धार छी
जीव-जन्तु लेल हे नदी मैया
अहाँ छी साक्षात भगवान।
नदी मैया हे
करियौ...।

जंगलसँ लकड़ी भँसा अनै छी

बालू-पाथर दहा अनै छी
ओइ बालु-पाथरसँ बनैए
सड़क, पुल आ पैघ-पैघ मकान।
नदी मैया हे
करियौ...।

हम मानव, पापी अधर्मी
नासमझ आओर, बड्ड कुकर्मी
कुड़ा, कचरा अहाँमे फेकै छी
गन्दी नाली सेहो गिरबै छी
माल-मवेशीक लाश फेकै छी
पर्यावरण प्रदूषित होइए
रंग-रंग केर रोग पसरैए
अहाँ जलमे बास करएवला जीवकेँ
हमरे कारण जाइए परान।
नदी मैया हे
करियौ...।

अहाँ जखन अपन रूप धरै छी
बान्ह, सड़क, तटबन्ध तोड़ै छी
खेतमे लागल फसल गिरै छी
इनार, पोखैर, गाछी-बिरछीकेँ

मेटा दइ छी नाम।
नदी मैया हे
करियौ...।

तीन बहिन अहाँ जेतए मिलै छी
तीनू मिलि त्रिवेणी धाम कहबै छी
अपन पापसँ मुक्ति पबैले
करैत अछि लोक स्नान।
नदी मैया हे
करियौ...।

हम मानव पापी, अज्ञानी
कनियोँ नै अछि ज्ञान
अपने पएरमे
कुरहैर मारै छी
अवग्रहमे अछि परान।
हमर गलती सभ, माफ करू मैया
अहाँ छी पैघ महान
नदी मैया हे
करियौ...। ❑

सभसँ पैघ माए-बाप

सुनू यौ बाबू, सुनू यौ भैया
सुनू लगा कऽ धियान यौ
माए-बापसँ पैघ नइ अछि कियो
तीनू लोकमे आन यौ।

माएकेँ बुझू माता पारबती
पिताकेँ शंकर भगवान यौ
कामौर लऽ कऽ कथीले
जाएब एतेक दूर
घरेमे बाबाधाम यौ
पएर छुबि दुनूकेँ करियौ
सुति-उठि कऽ प्रणाम यौ।

नअ मास धरि अपन पेटमे
माए अहाँकेँ रखलैन यौ
अहाँ खातिर, अपन सुख-सुविधा दिस
घुरियो कऽ ने तकलैन यौ
पिताक कोरामे केलौं पैखाना
तेकर ने कोनो ठेकान यौ

माए बापसँ पैघ नइ अछि कियो
तीनू लोकमे... ।

कन्हापर लऽ कऽ पिता अहाँकेँ
समूचा गाम घुमाबए यौ
माए अहाँकेँ गोदीमे लऽ कऽ
लोरी गाबि सुनाबए यौ
अहाँकेँ नीक भोजन भेटए
से हरदम रखलैन धियान यौ
अहाँक जिनगी नीक बनए
केलैन नइ कहियो आराम यौ
माए बापसँ पैघ नइ अछि कियो
तीनू लोकमे... ।

गरीब रहितो माए-बाप अहाँक
कन्वेंटमे नाओं लिखौलैन यौ
अपन माथपर चाउर-दालि सभ
होस्टलमे पहुँचेलैन यौ
माए अहाँक गहना बेचलैन
पिता बेचलैन जमीन यौ
बेटा हमर हाकिम बनतै
हेतै हमर सुदिन यौ

जिनगीमे कहियो यौ बाबू
करब नइ एहेन काज यौ
माए-बापक माथ झूकत
आओर भऽ जाए अपमान यौ
हुनका सभकेँ आशा बड्ड छैन
छैन बड़ अरमान यौ
हुनक मनोरथ पूरा करबैन
पूरा करबैन आश यौ
जइ समाजमे
जन्म लेलौं
तेकर करब विकास यौ
माए-बापक नाम रोशन करबैन
आओर बढ़ेबैन शान यौ
अहूँकेँ भेटत सम्मान यौ
माए-बापसँ पैघ नइ अछि कियो
तीनू लोकमे...।

दस लाख टकाक दहेज बुड़ौलिऐ
अपने पसिनक कनियाँ अनलिऐ
तैयो केलैन कबूल यौ
केतबो बड़का गलती करैथ ओ सभ
देबैन नइ कहियो तूल यौ

माएकेँ बुझब माता जानकी
पिताकेँ भगवान राम यौ
माए-बापसँ पैघ नइ अछि कियो
तीनू लोकमे... ।

माए-बाप जखन
अथबल भऽ जाइथ
भऽ जाइथ
जखन लाचार यौ
हुनका सबहक भार उठेबैन
बनि कऽ श्रवण कुमार यौ
हुनका सभक आश जुड़ेबैन
देखेबैन चारू धाम यौ
माए-बापसँ पैघ नइ अछि कियो
तीनू लोकमे... ।

सेवासँ बढ़ि कऽ नइ कोनो व्रत अछि
आ ने धार्मिक अनुष्ठान यौ
तीनू लोकमे सभसँ पैघ माए-बाप
आओर छथिन बड्ड महान यौ
माए-बापसँ पैघ नइ अछि कियो
तीनू लोकमे... । ❑

इन्दिरा आवास

एक दिन मुखियाजीक चमचा एलैथ
ओ हमरासँ हाथ मिलौलैथ
हम हुनका कुर्सीपर बेसौलयैन
प्योर दुधक चाह पियौलयैन
खैनीमे चुन मिलेलौं
अपनो खेलौं हुनको खियेलौं
खैनी खा कऽ ओ बजला
अपना एबाक भेद खोलला।

बड्ड मोसकिलसँ मुखियाजीकेँ मनेलौं हेन
अहाँक नाओं हुनका डायरीमे लिखेलौं हेन
ओ कहाँ मानै छला
अहाँकेँ कहाँ जानै छला
जँ करेबाक हुअए काम
तँ जल्दी करू इन्तजाम
जुनि करू सोच-विचार
लाउ टका पाँच हजार
नहि तँ दोसरो अछि तैयार

मुदा अहाँ अपन छी खास
अहाँपर अछि पूरा बिसवास
दियाएब अहाँकेँ इन्दिरा आवास
की यौ अहाँकेँ नहि लागल
हमर बात रास।
ऐ बकलेल बनि जाएत
मोफतमे अहाँकेँ मकान
भऽ जाएत धिया-पुताक कल्याण
समाजमे बढ़ि जाएत अहाँक मान
अहाँ बुझब एकरा अपन शान
जँ हमर गप्प अहाँकेँ कनीको पसीन अछि
तँ जल्दी करू भैया किएक तँ समये चन्द अछि।
नहि तँ बादमे बड्ड पचताएब
आ हमर दिमाग खाएब
मुदा हम की किछु कऽ सकब
अहाँकेँ की किछु दऽ सकब।

आखिर हम चमचाजीक बातमे एलौं
महाजन लक्ष्मी भैयाक ओइठाम गेलौं
हम केलिऐन हुनकासँ अर्ज
यौ महाजन दिअ हमरा पाँच हजार टका कर्ज
लऽ लिअ कागजपर औंठा निशान

मुदा टाका करू जल्दी भुगतान।

महाजन लक्ष्मी भैया बजला-
ई लिअ रूपैआ करू अपन काम
समयेपर आपस करब
नहि तँ भऽ जाएत अहाँक महींस नीलाम।

हम देलिऐन चमचाजीकेँ टका पाँच हजार
ओ मुस्की दैत भऽ गेला
फटफटियापर सवार
हम केतेको बेर ब्लॉकक चक्कर लगेलौं
मुदा आइ धरि इन्दिरा आवासक
राशि नहि पौलौं।

ब्लॉक दौड़ैत-दौड़ैत हमर चप्पल घिसल
ओमहर महाजनक टाका
आपस करबाक समय बीतल
हम चमचाजीसँ कहलयैन
अपना बोलीमे साए मन मिश्री घोरलयैन
यौ नेताजी, अन्नदाता बड़का बौआ
कृपाकय आपस कऽ दिअ
हमर पाँच हजार ढौआ

मुदा ओ करए लगला टाल-मटोल
किएक तँ हुनकर नेति छेलैन
करब पाँच हजार टाका गोल
हम सोचलौं जे हमरा ठकलक
आ हमर महींस नीलाम करौलक
ओकरो बिगाड़ि दिऐन खेल
आ चमचाजीकेँ पहुँचए दिऐन जेल
मुदा हम ई काज नहि करि सकलौं
चमचाजीसँ लड़ाइ नहि लड़ि पेलौं
किएक तँ आजादीक आइ
72म बर्खक बादो हमरा
जकाँ गरीब असहाय अनाथ छै
जखन कि चमचाजीकेँ माथपर
एम.एल.ए; एम.पी.क हाथ छै
आखिर हमर महींस भऽ गेल नीलाम
नहि बनि सकल हमर मकान
बिगड़ल हमर सभ काम
दूध बेचि कऽ करै छेलौं गुजर
आब जीरी रोपैले
करै छी पंजाब प्रस्थान। ❑

मिथिलाधाम

जहाँ बहै कोसी, कमला, वागमती, वलान यौ
पावण मिथिलाधाम यौ
मिथिला सन नहि आन यौ
छैन मण्डन, अयाचीक बड्ड नाम यौ
विद्यापति केर धाम यौ
पावण मिथिला धाम यौ।

जैठाम सीता सन भेली नारी
छला राजा जनक सदाचारी
आओर पाहुन छेलखिन श्री राम यौ
पावण मिथिलाधाम यौ
मिथिला सन नहि आन यौ
पावण मिथिलाधाम यौ...।

छैथ सखड़ामे माए सखेश्वरी
आओर ठाढ़ीमे परमेश्वरी
जैठाम बरहम बाबा विराजैथ गामे-गाम यौ
मिथिला सन नहि आन यौ

पावण मिथिलाधाम यौ... ।

जैठाम आर्द्रा, चौठचन्द्र, जीतिया
भाए-बहिनक स्नेहक पाबैन अछि भातृ-द्वितीया
जैठाम कोजगराकेँ बड्ड नाम यौ
बाँटैथ पान-मखान यौ
पावण मिथिलाधाम यौ
मिथिला सन... ।

नेहरा, सरिसव आओर पोखरौनी
कोयलख, पिलखवाड़, मंगरौनी
ओइठाम पैघ-पैघ भेल विद्वान यौ
पावण मिथिलाधाम यौ
मिथिला सन... ।

जैठाम नामी माछ-मखान
आओर अछि फलक राजा आम
जैठाम जमाएकेँ बुझल जाइए भगवान यौ
आओर पाहुनकेँ भेटए सम्मान यौ
पावण मिथिलाधाम यौ
मिथिलासन... ।

जैठाम कियो नहि भेटत लफंगा
सबसँ नीक शहर दरभंगा
ओइठाम पैघ-पैघ दोकान यौ
भेटत सभ समान यौ
पावण मिथिलाधाम यौ
मिथिला सन... ।

मिथिला पेटिंग मधुबनीकेँ दुनियाँमे बड्ड नाम छैक
खादी भण्डार मधुबनीकेँ भाँति-भाँतिक काम छैक
जैठाम मानव सेवा करब सभसँ बड़का काम यौ
पावण मिथिलाधाम यौ
भेला ललित बाबू सन नेता
मिथिलाक सच्चा बेटा
विकासक खातिर देलखिन अपन प्राण यौ
मिथिला... ।

मिथिला विभूति सूरज बाबू सन पैघ-पैघ भेला नेता
अजादीक लड़ाइ लड़बामे
रसिक, अनन्त, गुरमैता
देशकेँ अजाद करबामे
ऐ धरतीकेँ बड्ड योगदान यौ
पावण मिथिलाधाम यौ

मिथिला सन... ।

मिथिलाक कला, मिथिलाक साहित्य
मिथिला केर संस्कृति नीक
फूसि ने बाजब दान करब
ई मैथिलकेँ प्रवृति थिक
अन्न, वस्त्र वर्तनक संगे
करै छैथ लोक गोदान यौ
पावण मिथिलाधाम यौ
मिथिला सन... ।

बड्ड मधुर अछि सुनब बाजबमे
मिथिलाक मैथिली भाषा
मिथिलाक विकास हुअए खूब
हमरो अछि अभिलाषा
मिथिलाक विकासक खातिर
हमहूँ देब योगदान यौ
पावण मिथिला धाम यौ
मण्डन अयाची केर छैन बड्ड नाम यौ
विद्यापतिक धाम यौ । ❑

जनता

अखन जनता सुतल अछि
मुदा ओ भूखल अछि
भूखलमे निन्नो
की होइ छइ
तँए ओ जागत
आ बाजत
बाजत अपन अवस्थापर
करत प्रहार
वर्त्तमान बेवस्थापर। ❑

ढौआ- 1

समयक संग लोकक
बदैल जाइत अछि
बेवहार
आन तँ आने छैथ
बदैल जाइ छैथ
अपनो रिश्तेदार।

यएह अर्थक युग छी
भाय यौ,
जँ ढौआ नै रहत
संगमे
तँ नहि चिन्हत
अपन जिगरी यार। ❑

भूतही बलान

भूतही बलान
बड्ड बदनाम
जेम्हर मुहेँ बोहए लगल
मचि गेल कोहराम।

गाछ-वृक्ष सुखबैत अछि
लोकक़ेँ सतबैत अछि
जेम्हर ई चलि जाए
प्रलय मचबैत अछि।

फसल डुमि जाइत अछि
सड़क टुटि जाइत अछि
बाउलसँ खेत भरि दैत

बाढ़ि जखन अबैत अछि।

नदी बड्ड शैतान छै
पानिमे ऊफान छै
फिरिशान किसान छै
ई भूतहीबलान छै।

नेपालसँ अबैत अछि
कोसीमे मिलैत अछि
इनार आ पोखैरक
नामो-निशान मेटबैत अछि
केतेको घर-दुआरकेँ
माटिमे मिलबैत अछि।
क्षणेमे भरि जाएत
आ क्षणेमे सुखि जाएत
तँए ई बलान नदी
भूतही कहबैत अछि।

मुदा एगो नीको अछि बात
जखन नदीमे अबैत अछि
बुढ़िया बाढ़ि
खेतमे अबैत अछि पाँक-पलारि

धानक बोझसँ भरि जाइत अछि घर-दुआरि
खूब उपजैत अछि धान
बनैत अछि नव-नव दालान
स्वत: चेहरापर आबि जाइत अछि
जीजिविषाक मुस्कान
खुशी होइ छैथ किसान
करै छैथ बयान
ई छी माता बलान। ❑

अजगूत नारी

एक अजगूत नारी देखल
बड़ी प्यारी देखल
की न्यारी देखल
बरछी, तीर, कटारी देखल।

आँखिमे काजर देखल
पैरमे पायल देखल
पैरमे रचल मेहदी देखल
केशमे सजल गुलाबक
फूल देखल
छौड़ा सभक हृदयपर

चलैत शूल देखल।
सुन्नैर केर आओर सुन्नैर बनबैत
चकमक करैत साड़ी देखल
बरछी, तीर, कटारी देखल।

कानमे बाली देखल
ठोरपर लाली देखल
आँखिसँ चलबैत तीर
रजोकेँ बनबैत फकीर
छौड़ा-माड़ैरक की
गप्प कही
एक नजैर देखैले ओकरा
बुढ़बो सबहक मारा-मारी देखल
एक नारी देखल।
बरछी, तीर, कटारी देखल।

केशक देखल ओकर
अजगूत स्टाइल
चेहरासँ छिटकैत
हरदम स्माइल
हँसै छलि
तँ की छल दाँतक छटा

बोली एहेन जेना
मधुर गीत गाबि
रहली हेन लता।
हर चितबन ओकर बरछी देखल
आओर अंगड़ाइ कटारी देखल
एक अजगूत नारी देखल
बरछी, तीर, कटारी देखल। ❑

लाचार

जिनकामे नै छैन
एहेन शक्ति
सहै कऽ दहेजक मारि
हुनका घरमे जँ छैन कन्या
बिआहक लेल दू-चारि
अपना माथपर महसूस करै छैथ
लादल बड़का भार
फेर तँ ओ मनुखक हेता
बड्ड पैघ लाचार।

नहि दिनमे भेटै छैन आराम
आ रातियोमे नहि चैन

दुल्हा खोजैले
दौड़ रहल छैथ
हरदम भेल बेचैन।

जिनका संग लड़काबला सभ
करै छैन अत्याचार
फेर तँ ओ मनुख हेता
बड्ड पैघ लाचार।

कियो मांग करै छैन
नगद रूपैआ
कियो कहै छैन
दऽ दिअ सोना
कियो कहै छैन
मोटरक संग दियौ
दुल्हिनकैं सभटा गहना।
लड़काबला सभक गप
सुनि-सुनि ओ करै छैथ विचार
की पता कहिया उतरत हमर
माथसँ बेटी सभक भार।
लड़काबला केर घर जा-जा कऽ
भऽ जाइ छैथ बेमार

फेर तँ ओ मनुख हेता
बड्ड पैघ लाचार।

आदमी जब मुसीबतमे पड़ै छैथ
अबै छैन भगवानक धियान
हाथ जोड़ि विनती करै छथिन
आओर करै छथिन प्रणाम
हे प्रभू हम कष्ट हरू
एहेन करू चमत्कार
बिना दहेजक बिआहक लेल
योग्य बर भऽ जाथि तैयार
बेटीक बिआहक लेल
बेचै छैथ जमीन आर मकान
तैयो दहेजक
जुटै नै छैन सभ समान
दहेजक मांग समैपर
पूरा नै भेलासँ
सुनै छैथ फटकार
फेर तँ ओ मनुख हेता
बड्ड पैघ लाचार। ❑

बेटी

बेटी बचाऊ
बेटी पढ़ाऊ
बेटीकेँ दियौ मान
आओर दियौ सम्मान।

बेटीक प्रति रखियौ
सकारात्मक विचार
जुनि करियौ
बेटीपर अत्याचार।

किए करै छी
कन्या भ्रूण हत्या
जुनि बुझियौ
बेटीकेँ अभिशाप
कन्या भ्रूण हत्या छी
सभसँ बड़का पाप।
ई पापे टा नहि छी
मानवताक लेल छी

कलंक बड्ड भारी
आऊ अपना सभ
मिलि कऽ विचारी।

जँ करैत रहब
कन्या भ्रूण हत्या
तँ रूकि जाएत
श्रृष्टिक विकास।
हमर कहबाक मतलब
बिल्कुल अछि साफ
श्रृष्टिक लेल नारी बिनु,
पुरुख अछि हाफ।
श्रृष्टिक लेल छी
नारी पैघ आधार
ऐ बातपर गम्भीरतासँ
करू विचार।

जुनि सोचू कन्या भ्रूण हत्याक बात
नहि तँ हएत बड्ड पैघ आघात।

की कहै छिऐ?
बेटीक बिआह

भऽ गेल हेन अभिशाप
दहेजक ओरियानमे
भेंट भऽ जाइए
मरलाहा बाप।

यौ दहेज तँ समाजक
बनाएल कु-बेवहार छी
जे भऽ गेल हेन कुरीति
आ बनि गेल
समाजक कोंढ़
आ मानवताक लेल कलंक।

तँए, ऐ कोंढ़कें
जड़िसँ मेटाऊ
बेटीकें पढ़ाऊ
बेटीकें बँचाऊ
बेटीकें पढ़ेलासँ हएत
स्वच्छ समाजक निर्माण
आओर हएत
मानब केर कल्याण। ❑

बरियाती

आगू-आगू शहनाइ
पाछू-पाछू बैंड बाजा
स्कार्पिओमे बैसल
सजिकऽ दुल्हा राजा।

बरियातीमे सजल अछि
मारूती बोलेरो
डी.जे.पर नाचि रहल
नवका-नवका हीरो।

कियो पहिरने जीन्स पैन्ट
कियो पहिरने धोती
मुखियाजीक माथपर देखियौन
केहेन छैन गाँधी-टोपी।

दुल्हाक छोट भाए ऐनामे
रहि-रहि कऽ चेहरा निहारैत अछि
अन्दर-सुटिंग सर्टपर

टाइ केना सेरियाबैत अछि।

भी.आइ.पी. बरियातीकेँ
केहेन छैन काज
कनियाँक संग नाचि रहला हेन
कनिक्को छैन लाज?

भी.आइ.पी. बरियाती के छैथ
से नै बुझलिऐ
आ दुल्हाक बहनोइकेँ स्टाइल
नै देखलिऐ।

भी.आइ.पी. ऐ लेल भेला
जे छोट सारक छिऐन बिआह
सासुरमे अखनो भेटै छैन
प्योर दूधक चाह
खातिरमे रहै छैन अखनो
अखनो सासु'ससुर तबाह।

काकाकेँ शोभै छैन
पयजामा आओर कुरता
के पियाओत 'फाइटर'

लागल छैन सुरता।

मौसा जीक देखियौन
पकलाहा मोंछक शान
हाथमे बेंत शोभै छैन
आ मुँहमे छैन पान।

दुल्हाक मामाकेँ
की बुझै छिऐन कम
ठोरपर चार्म्स सिगरेट छैन
आ पॉकैटमे रम।

दुल्हाक पीसाजी
ठेंठ देहाती
कन्हामे छत्ता छैन
हाथमे छैन लाठी।

दुल्हाक पिताजीक मनमे छैन
भरल-पूरल आशा
दहेजसँ घर भरि जाएत
पूर हएत अभिलाषा।

दुल्हाक तमन्ना छैन
कनियाँ हुअए एहेन
फिल्मी हीरोइन
करीना कपूर छै जेहेन।

चर्चा अछि पूरा
गली आओर मुहल्ला
खेनाइमे भेटत
वर्फी आ रसगुल्ला।

खेनाइमे भेट जाए
मूर्गा आओर रोटी
दारूक बोतल संगे
रौह माछक पेटी।
किछु लोक बरियातीमे
एहनो बात बजैत अछि
बेसी दालि खाइबला
भोज नहि करैत अछि। ❑

पतिक नाम पत्नीक चिट्ठी- गीत

प्रिये हमर प्राणक नाथ
सादर प्रणाम
हम तँ कुशल छी
अहाँले बेकल छी
चिट्ठी देखते पिया
चलि आएब गाम
प्रिये हमर प्राणक नाथ
सादर प्रणाम।

फगुआमे आएल छेलखिन
चुनियाक ओझहा
केते समाद देलखिन
तँ गेलियैन सोझहा
बैसबो ने केलिऐ यौ
लाजे पड़ेलिऐ
ओ पुछलखिन अहाँक नाम
प्रिये हमर प्राणक नाथ
सादर प्रणाम।

जुड़शीतलमे गेल छेलिऐ
रानीगढ़ी मेला
मेलामे छेलै पिया
बड्ड ठेलम-ठेला
किछु नहि देखलिऐ
किछु नहि कीनलिऐ
मेलामे भेटल
अपन छोटका बौआ श्याम
प्रिये हमर प्राणक नाथ
सादर...।

बड़की भौजीक
पएर छैन भारी
छोटकी करै छैथ
परीक्षाक तैयारी
नैहरामे खटैत-खटैत
पड़ब हम बेराम
प्रिये हमर प्राणक नाथ
सादर...।

पिया जल्दी अहाँ गाम आऊ

हमरा गौना करा लऽ जाऊ
नहि तँ तेज देब हम पराण
प्रिये हमर प्राणक नाथ
सादर प्रणाम। ❑

बहिनक उपराग- गीत

बहिनक आशाक डोरि अहाँ
तोरि देलिऐ यौ
भरदुतिया पाबैनमे भैया
किएक नै एलिऐ यौ
एहेन जुलुम अहाँ किए
केलिऐ यौ
भरदुतिया पाबैनमे भैया
किएक नै एलिऐ यौ।

भोरे उठि हम अँगना निपलिऐ
अँगना नीपि कऽ
पीठार पिसलिऐ
पीसल पीठारसँ
अरिपन लिखलिऐ
पान, मखान, सुपारीक संग

फूल ओरिऐलिऐ यौ
भरदुतिया पाबैनमे भैया
किएक ने एलिऐ यौ
तीनसल्ला बासमती चाउरक
भात रीनहलिऐ
देशी राहैरक गोइठासन दालि रीनहलिऐ
अल्हू-भाँटा-कोबीक संग
तिलकोरक पात तरलिऐ यौ
भरदुतिया पाबैनमे भैया
किएक ने एलिऐ यौ।

भोरसँ साँझ धरि हम
अहाँक बाट तकलिऐ
अहाँक आशामे हम
निराहार रहलिऐ
अहाँ नै एलिऐ भैया
हम नोर बहेलिऐ यौ
भरदुतिया पाबैनमे...।

कहै छैथ नन्द विलास भैया
सुनू यै बहिन-दैया
जीन्सबला भैया सभकेँ

मधुर छैन अपन कनियाँ
आओर रूपैआ
जीन्सबला भैयाक आशा
छोड़ि दियौ यै
मानवतासँ नाता अहाँ
जोड़लिऐ यै
मानवतासँ नाता अहाँ
जोड़लिऐ यै। ❑

साइकिल

साइकिलक सवारी
बड्ड न्यारी
जखने इच्छा भेल
करू यात्राक तैयारी
ने बेसी हल्लुक
ने बेसी भारी
जखने इच्छा भेल
करू यात्राक तैयारी।

सभ क्षेत्रमे एकर अछि काम

ऐसँ भेटैत हरदम आराम
चाहू तँ बाजारसँ खाद लऽ आउ
चाहू तँ मीलपर सँ धान कुटा लाऊ
चाहू तँ केतौ केकरो सनेस पठाऊ
कखनो नहि करत इनकार
सेवामे रहत हरदम तैयार।

प्रदूषणक नहि अछि खतरा
चौड़गर सड़कक नै अछि लफड़ा
ऐपर सँ गिरलोपर
नहि जाएत जान
साइकिलसँ होइत अछि
सभक कल्याण।

ऐमे नहि लगैत अछि
डीजल वा पेट्रोल
ऐपर रहैत अछि हरदम
चालककेँ कन्ट्रोल
एकरा आगू सभ सवारी
अछि बेकार
तँए एकर अछि
सभ जगह भरमार।

एकरा चलेनाइ

बाल-बोधक खेल छी

देहातक लेल तँ ई

तूफान मेल छी

एकर घन्टीक अवाज

सुनैमे लगैत अछि नीक

तँए, बेर-बेर कहै छी

साइकिलक सवारी

अछि बड्ड ठीक। ❑

कोसीक बाढ़ि

हहाएल-फुहाएल आएल

कोसीमे बाढ़ि

केतेको खेत गिरलक

आ देलक केतेको

घरकेँ उजाड़ि।

किसान सभ केतेक

मेहनतसँ लगौने छल जजाति

हुनका सभकेँ लगलैन

आर्थिक मारि।

देखियौ केहेन बजरैए
पानिमे ढल
नाह केना पार करत अखन
नाविककेँ काज नहि
करै छै अकल।

बान्ह सड़क तोड़लक
आ बहा कऽ लऽ गेल
नारक टाल
लोक सभ तँ
बेसाहो खाएत
मुदा खाएत की
माल-जाल।

हे देखियौ
केहेन भारी भाँसल
जाइत अछि गाछ
मुदा ओकरा के पकड़त
केकरो नहि हिम्मत होइ छै
आ नै करै छै

दिमागे काज।

यौ बाढ़िये छै तेहेन विकराल
दुनू तटबन्धक बीच
बसैबला लेल
साक्षात छी काल।

रविया एक बिगहामे
लगौने रहए धानक चास
बालुसँ चास भराए गेलै
पूर नै भेलै गिरहतक आश।

महाजनसँ कर्जा लऽ कऽ
देने रहए खेतमे डी.ए.पी. खाद
जिंक आओर यूरिया
कोसीक बाढ़िमे
नास भऽ गेलै
तइले काटैए
रबिया अहुरिया।

रबिया सन-सन हजारो
किसानक अछि यएह हाल

यौ बाढ़िये छै
तेहने विकराल
दुनू टटबन्धक बीच
बसैबला लोक लेल
साक्षात छी काल।। ❑

ढौआ- 2

ढौआ अछि तँ यार अछि
ढौआ अछि तँ प्यार अछि
संगमे जँ ढौआ हुअए
तँ अपन पूरा संसार अछि।

ढौआ अछि तँ भाए अछि
ढौआ अछि तँ माए अछि
ढौआक बलपर लोक
करैत एक-सँ-एक
पढ़ाइ अछि।

ढौआ अछि तँ शान अछि
ढौआ अछि तँ मान अछि
ढौआबला पर तँ

दुनियाँ दयावान अछि।

ढौआसँ पूर भऽ जाएत
दिलक सभ अरमान
ढौआबलाक लेल घरे जकाँ
रूस आओर जापान अछि।

ढौआ जँ खर्च करब तँ
करत सभ बड़ाइ
ढौआक कारण टुटैत अछि
रिश्ता आओर सगाइ।

ढौआ रहत तँ बाटो-बटोही
करत प्रणाम
नहि तँ अपनो
भऽ जाएत अनजान।

ढौआबलाकेँ सभ जगह
अछि अरामे-अराम
ढौआ नै रहलासँ
इज्जतो भऽ जाइए नीलाम।

ढौआ खुदा छी
ढौआ छी राम
ढौआ ईशा छी
ढौआ छी श्याम।

जिनका छैन ढौआ
वएह आइ छैथ महान
वएह छैथ इंसान
हुनके सभ जगह
भेटै छैन सम्मान। ❑

गाए

सभ कियो पोसू
एक-एक गाए
जे दऽ देबै
सभ किछ खाए।

सिलेब पोसू पोसू कारी
हल्लुक पोसू वा पोसू भारी
देशी पोसू वा पोसू दोगला
जरसी पोसू वा पोसू सहिवाल।

देशी आ दोगलामे
तरद्दुत कम अछि
मुदा जरसी आ सहिवालकेँ
करए पड़त बेसी देखभाल।

दूध देत कम-सँ-कम
दू-चारि सेर
साँझ दुहब वा
दुहब सबेर।

दू-चारि सेर दूध
देत दोगला आ देशी।
जरसी आ सहिवाल खाएत कम
मुदा दूध देत बेसी।

गाएक दूध खाएब
रहब निरोग
दूर-दूर धरि नहि
फटकत रोग।

मनुखक कोन गप्प जे
देवतोकेँ लगै छैन

दूध-दहीक भोग।

गाएक दूध छी
अमृत समान
दूधेसँ होइए
पैघ-पैघ अनुष्ठान।

ई बात अछि बिल्कुल सत्
पंचामृतमे गाएक दूध, दही
आ घीक बड्ड महत
की बुझै छिऐ गाएक गोबरक
जारैनयेटामे अबैए काज
यौ अहीसँ ठाँव कऽ शुरू होइए
पैघ-पैघ अनुष्ठान।

दूधोसँ बेसी अछि
गाएक गोंतक काम
पैघ-पैघ बेमारीमे दबाइक
काज होइए
मुदा सभकेँ नइ अछि
एकर ज्ञान।

गाएक गोंतक फसिलोमे
होइत अछि उपयोग
गोंतक छिड़कावसँ
फसल रहैत अछि पूर्ण निरोग।

एकटा आओर
बात अछि खास
मरलोपर अबैए गाए काज
बड्ड उपयोगी एकर चाम
जूत्ता-चप्पल बनबैमे अबैए काम
तँए गाएकेँ बुझू
माए समान
एकर सेवा करब तँ
दूध, गोंत आ गोबरक
भेटत अवदान
हे गौ माता अहाँकेँ हम
करै छी हाथ जोड़ि
शत्-शत् प्रणाम। ❑

जबानक इच्छा

एकटा जबान
करै छला भगवानक पूजा
छला महादेवक
बड्ड पैघ भक्त
ऊँ नम: शिवाय: केर
जाप करै छला
साँझ-भोर दुनू वक्त।

पूजासँ खुश भऽ कऽ एक दिन
प्रकट भेला भोले शंकर
आ बजला-
कहू भक्त की अछि अहाँक मन
बाजू पुत्र चाही आकि चाही धन?

भक्त बजला-
हे भोले
किएक लऽ रहल छी
हमर अहाँ परीक्षा

हमर तँ बस
एतबेटा अछि इच्छा
दुश्मनकेँ नै पीठ देखाबी
छातीपर खाइ गोली
माए-बाप गर्व करए हमरापर
आओर मनाबए होली
जँ हमरापर खुश छी
अपने भगवान
तँ दिअ हमरा
यएह सभ वरदान
आन्धी आबे या तूफान
देशक बढ़ाबी हरदम शान।
भीषन गर्मी हुअए
वा कँपकँपीबला जाड़
चाहे जाड़सँ काँपए हाड़
सीमापर रही तैयो डटल
अपन कर्त्तव्य पथपर अटल
भारत माताक लेल बहावी खून
मातृभूमि केर काज आबए
हमर लहूक एक-एक बून
हमरा एहेन दिअ जूनून
दुश्मनक पीब जाइ हम खून।

‘शिवाजी’ केलैथ मुगलक
दाँत खट्टा
हम छोड़ा दी
देशक दुश्मनक छक्का
सीमापर भऽ जाइ वलिदान
देशक लेल दऽ दिऐ प्राण। ❑

विद्वान

विद्याध्ययन कऽ लेला
कऽ लेला चरित्र निर्माण
माए-बाबूक सेवा केला
भेला नैतिकवान।

सत्य आओर अहिंसाक
सभकेँ दइ छैथ ज्ञान
निश्चित रूपसँ ओ मनुख
हेता पैघ विद्वान।

जीवनमे अपनाए सादगी
रखै छैथ पैघ विचार

ऊँच्च-नीच, अमीर-गरीबसँ
करै छैथ समान बेवहार
अपना विद्वतापर जइ मनुखकेँ
कनीक्को नहि छैन अभिमान
निश्चित रूपसँ...।

परोपकारक भावना रखि
दइ छैथ सभकेँ शिक्षा
दीक्षा देथिन धर्म बुझि कऽ
नइ छैन धनक इच्छा
अपनाकेँ जे क्षति करि कऽ
करै छैथ जे
आनक कल्याण।
निश्चित रूपसँ...।

सभ जीवपर दया करै छैथ
गलत काज करैसँ डरै छैथ
आदरभावसँ अपनासँ पैघकेँ
करै छैथ जे सम्मान
निश्चित रूपसँ...।

जिनका किनकोसँ नै छैन बैर
जिनका लेल नै छैन कियो गैर

दानवसँ बनि जाइ छैथ मानव
पाबि जिनकासँ ज्ञान
निश्चित रूपसँ... ।

कर्मकेँ पूजा बुझलैथ जे
लेलैन ने कखनो चैन
सेवामे तत्पर रहला हरदम
की दिवा, की रैन
छोट-पैघ जीव सभमे जे
देखै छैथ भगवान
निश्चित रूपसँ... ।

आनक पीड़ा देख कऽ जे
भऽ गेला दुखी
आओर खुशी देखलासँ
भऽ गेला सुखी
जिनकर इच्छा हर मानव केर
विकास हुअए चहुमुखी
सभ मनुखकेँ भेटै सफलता
जिनकर ई अरमान
निश्चित रूपसँ ओ मनुख
हेता पैघ विद्वान। ❑

दहेज

दहेज कलंक छी
छी बड़का पाप
दहेजक कारण
केतेको परिवार टुटैए
दहेज छी बड़का अभिशाप।

दहेज मानवता केर मुँहपर
छी बदनुमा दाग
मुदा समाजक किछ लोक
बेसी दहेज लेबकेँ
बुझैत अछि अपन पाग।

केना मेटाएत दहेज प्रथा
सभ मिलि कऽ ऐ समस्यापर सोचू
ऐमे अछि सभक भलाइ
दहेजेक कारण टुटैत अछि
केतेको रिश्ता आओर सगाइ।

दहेजक कारण कन्या
भ्रूण हत्या होइत अछि
दहेजक कारण केतेको
बेटी आगिमे जरैत अछि
फाँसीपर सेहो चढ़ैत अछि
माहुर खा-खा मरैत अछि
दैत अछि अपन प्राण।

दहेज समाजक लेल भऽ गेल
अछि नासूर
सभ मिलि एकरा
करू दूर। ❑

सासु-पुतोहु

हरदम सुनबामे अबैए
सासु-पुतोहुकेँ बड्ड
दुख दइ छै
पुतोहुओ कम दोखी नै अछि
भानस-भात छोड़ि
भरि दिन टी.भी. देखैत अछि।

रंग-रंगक फैशन करि
बजार घुमैत अछि
ब्यूटी-पार्लर जा
फेसियल करबैत अछि
होटलमे जा कऽ खाइत अछि
चाट आओर आइसक्रीम
एम्हर सासु-ससुर
एक गिलास पानियोँले
तरसैत रहैत अछि।

पुतोहुकेँ छै बड्ड गुमान
किएक तँ दुल्हा ओकर
कमाइ छै
तँए बढ़ल छै शान।

पुतोहु केर बेवहार देख
सासु बाजए लगल अटपट
शुरू भऽ गेल परिवारमे खटपट
कऽ देलक सासु पुतोहुकेँ भीन
पुतोहु सोचैत अछि
नीके भेल, आब लेब
चैनक नीन।

केतौ-केतौ सासु
सेहो अछि दोखी
पुतोहुएपर दऽ देलक
परिवारक सभटा भार
टो-टो गलतीपर बिगड़ल
आओर केलक प्रताड़ित
पुतोहु बुझलक एकरा
अपनापर अत्याचार
नतीजा, टुटि गेल परिवार।

सासु सभसँ करै छी
हम हाथ जोड़ि निवेदन
पुतोहुकेँ जुनि बुझियौ
आनक बेटी
नहि करियौ ओकरापर
कोनो अत्याचार
कनी अहू बातपर
करियौ विचार
अहाँक बेटीक संग
जँ एहने हुअए बेवहार
कहू केहेन लगत
अहाँ मनमे

कहू आगि नै लागि
जाएत सौंसे तनमे।
तँए, पुतोहुकेँ पुतोहु नै बुझि
बुझियो अपन बेटी।

पुतोहुओकेँ दइ छी हम एकटा सलाह
जँ सलाह पकैड़ चलती तँ
असान भऽ जेतैन जिनगीक राह
नै सासुसँ कहियो बजरतै अटपट
नै हेतइ कहियो खटपट
आ नै टुटत कहियो परिवार
एहेन करियो बेवहार।

सासु-ससुरक सेवामे
कऽ दियौ अपनाकेँ अर्पण
आओर हुनका सभकेँ करियौ
पूरा सम्मान
सुति उठि सभ दिन करियौ
दुनू केर पैर छुबि प्रणाम।
निश्चित रूपे ओ सभ
अहाँकेँ बेटी बुझता
आओर देत मान-सम्मान। ❑

सच्चा मानव

निर्मली कौलेजमे किछु दिन पहिने
छला एक व्याख्याता
कामेश्वर शर्मा नाओं छेलैन
छला विद्यार्थी केर भाग्य निर्माता।

बड्ड योग्य शिक्षक छला
पी.एच-डी.क उपाधि प्राप्त छेलैन
छला बड्ड प्रतिभावान
अनेको बेर हुनकासँ
गप्प केलौं
मुदा नहि देखलयैन
कहियो अभिमान।

नियत समयपर कौलेज आबैथ
छोड़ैथ नहि कहियो क्लास
ट्यूशनक कमाइकेँ पाप बुझथिन
एलैन नहि कहियो रास।

रहैथ मानवता केर सच्चा पुजारी
मनुख छला पैघ सदाचारी
सभ तृष्णाक भऽ गेल
छेलैन मनसँ अन्त
निश्चित रूपे रहैथ ओ
एकटा पैघ सन्त
छला पैघ दार्शनिक
आ नीक विचारक।
हमरा बुझाइत अछि जेना
रहैथ ओ गाँधीवादक मूक प्रचारक।

नैतिक शिक्षा बिलहै छला
विद्यार्थी भऽ जाइत छल निष्ठावाण
युग भऽ गेलै
हुनका गेला एतए-सँ
मुदा आइयो करै छिऐन
हुनक गुणक गान
एहेन महान सन्तकेँ
हमर शत-शत प्रणाम। ❑

सभसँ पैघ पूजा

हमरा पूजासँ भगवान
बहुत खुश भेला
प्रकट भऽ बजला-
कहू भक्त कथीले केलौं हमरा याद
अहाँक की अछि फरियाद।

भगवानक बात सुनि हम कहलयैन
हे भगवान!
मानवक केना हएत कल्याण
धरतीपर बढ़ि गेल अछि पाप
ने बेटा बापकेँ चिन्हैए
आ ने बेटाकेँ चिन्हैए बाप
ऐ बातक हमरा अछि बड्ड सन्ताप।

जाति-धर्ममे समाज बँटल अछि
अपन-अपनोसँ हटल अछि
बेटा-बापसँ कटल अछि
सभ स्वार्थमे आन्हर बनल अछि

जे रक्षक से भक्षक बनल अछि
जेकरा जेतए फबल
तेतए लूटैत अछि
ओ माथ धुनैत अछि
सभ चोर अछि
मुदा एक दोसरकेँ कहै छै
जे पकड़ा गेल से चोर
नहि तँ इमानदार कहबैत अछि
कहाँ केकरोमे बँचल
नैतिकता आओर इमान
अहीं कहू भगवान
केना हएत मानवक कल्याण?

भ्रष्टाचारसँ धन अरजै छै
चोर सिपाहीपर गरजै छै
साधुकेँ आइ कियो ने पुछै छै
सधुआ मुँह कुत्ता चाटै छै
उपेक्षित अछि
इमानदार, विद्वान
धनवानक बढ़ि गेल मान
जे अछि
भ्रष्ट, लूटेरा आ बेइमान

अहीं कहू भगवान
केना हएत मानव केर कल्याण।

ओकर मन जे कमाए पति
सभ आबए हमरे हाथ।
पति-पत्नीमे नहि अछि मेल
सभ जगह चलि रहल अछि
धन-ढौआक खेल
पत्नियों सभकेँ भऽ गेल छैन
ढौएसँ मेल
केतए गेल पतिव्रत
केतए गेल पति धर्म
केतए गेल चरित्र
आ आचरण
बेर-बिपैतमे
कहाँ दैत अछि
पत्नी आब पतिक साथ
चहुओर भऽ गेल
ढौएक राज...।

माए-बाप एक कप
चाह ले झखैए

माए-बापकेँ बिसैर
लोक पत्नी लऽ लऽ
टहैल रहल-ए
नै दइए माए-बापपर कनिक्को धियान
अहीं कहू हे भगवान
केकरामे बँचल
नैतिकता आ इमान
फेर केना हएत
मानव केर कल्याण।

हमर बात भगवान
धियानसँ सुनला
सुनला पछाइत
हँसि कऽ बजला
सुनू भक्त जुनि हौउ अधीर
करू ने करवनो चिन्ता-फिकीर
कर्त्तव्य पथपर रहू अटल
जीवक सेवामे रहू डटल
अपन भैंस कियो कुरहैरियेसँ नाथत
तइसँ की अछि लेना
अपना की-की गलती करै छी
सभ दिन देखू अपने ऐना

एकटा बात कहै छी अहाँकें
सुनू खोलि अपन कान
सभसँ पैघ पूजा
होइत अछि जीवक सेवा
राखब हरदम धियान
डिगत नहि कहियो अहाँ केर
नैतिकता आ इमान। ❑

छठिक डाला

कोसीमे बाढ़िक पानि घटल तँ
लगल कटनियाँ
केतेको धानक चास
नदीमे समाएल
किसानक उजैर गेल दुनियाँ।

चासेटा नहि कटल
कटल घर आ घराड़ी
अमीरोकें बिपैत पड़ल
मुदा गरीबक दिन
भऽ गेल बड्ड भारी।

एक घर डोम फेकना
सिसौनी गामक छीटपर छल बसल
ओकरो खोपरी कटिकऽ
नदीमे गिरल
कटिकऽ कोसीमे समाएल
सुगरक खोभारी।
फेकना झखैत अछि
तेसर बेर घर कटल
कटल सुगरक खोभारी
केतए खोपरी बनाएब आब
के देत बसैले घराड़ी।

सोचैत अछि फेकना
आब नहि बसब
कोसिकन्हामे
नहि हएत तँ बसि जाएब
सासुर मखनाहामे।

आगाँ सोचलक
सासुरमे बसब नहि छी
नीक बात
ऐसँ नीक बसि जाएब

भूतहासँ पश्चिम
केतौ एन.एच. कात।

सएह केलक फेकना
भूतहासँ पश्चिम
एन.एच.सँ दक्षिण
नहरक कात
बनेलक अपन बास।

मुदा ऐठाम नहि केकरोसँ
छेलै जान-पहचान
ने ढौआ-कौरी छेलै
आ ने छेलै कोनो काज-उदम।

फेकना करए लगल विचार
आबि रहल अछि दीयावाती
छठि-पाबैन-तिहार
सूप, कोनियाँ, डाला
जे बीनि कऽ बेचब
से केकरासँ लेब
बाँस उधार
अपना लग तँ

नहि अछि एकोटा छेदाम
फेर केना चलत काज।

एक दिन फेकना भोरे
हमरा लग आएल
सुनेलक अपन हाल
आ कहलक
गिरहत कोसीक मारल
हम छी बड्ड नचार
निहोरा करै छी
दअ दिअ
पाँच-सातटा
बाँस उधार।
सूप, कोनियाँ, डाला
बेचिकऽ दऽ जाएब
बाँसक दाम
ऊपरसँ दऽ जाएब
छठि पाबैनक बाँसक
सभ सरमजाम।

हमरा ओकरापर
आबि गेल दया

जा कऽ बँसबिट्टी
देलिऐ पाँचटा बाँस कटा।

छठिसँ दस दिन पहिने
फेकना दऽ गेल
सूप, कोनियाँ आ डाला
सात साए पच्चास टका
देलक बाँसक दाम
आ बाजल
गिरहत, हुकूम करू
आओर अछि किछ
हमरा जोकरक काज।

सभटा टाका
वापस दैत कहलिऐ
तों उजड़ल-उपटल छह
तँए तोरासँ नै लेबह
एकोटा बाँसक दाम
जेतेक बाँसक काज हेतह
लऽ जहिहह
छीट्टा, कोनियाँ, सूप
बेच कऽ दऽ जइहह दाम

मुदा बाँस बिनु
बिथुत नै करिहह
अपन काज।
आ हँ, पाबैनक जे समान देलह
तेकर बदलामे लऽ जा दूटा बाँस अखने साथ।

ओ बेर-बेर हाथ जोड़लक
आओर बाजल
गिरहत, अहाँ छी मनुख महान।

पाबैन दिन छठिक
घाटपर जाइसँ किछु क्षण पहिने
ठेहोवाली एली
आ बजली-
भैया, हमरा तँ हाटे नै भेल गेल
हमरा डालापर टाभ नेबो
कहाँ भेल।
तैपर हमर बेटी
जे बी.ए.मे पढ़ैत अछि
बाजल-
अँइ गै काकी
हमरा तँ दुइयेटा अछि टाभ नेबो

तइमे सँ तोरा की देबौ।

हम अपना बेटीकेँ कहलिऐ-
गइ बुच्ची, एना नै बाज
एकटा सँ अपन पाबैन कर
आ एकटासँ चला दहुन हुनको काज।

ठेहोवालीक गेला बाद
आएल लूटन चौपाल
आ बाजल-
गिरहत, हमरा कहाँ भेल कुसियार।
हम कहलिऐ-
हमरा लग एकटा छड़िया अछि
ओकरा दू टोन बनाउ
एकटा हमरा दिअ
आ दोसर अहाँ लऽ जाऊ।

घाटपर विदा होइत काल
हम अपना पत्नीकेँ कहलयैन-
छठि परमेसरीसँ की सभ मंगबै
बेटा, यश आकि घन।
हमर पत्नी बजली-

अहाँक की अछि मन
हम बजलौं-
छठि परमेसरीकेँ कहबैन
ओतबे दिहह मन
जइसँ गरीब-गुरबाक मदद
करैत रही सदिखन। ❑



नन्द विलास राय

लेखक परिचय-

नाम- नन्द विलास राय
राष्ट्रीयता- भारतीय
जन्म तिथि : 2 जनवरी 1957
माता : स्व. दुर्गा देवी, श्रीमती परमेश्वरी देवी
पिता : स्व. बच्चा राय
पत्नी : श्रीमती उषा देवी

पैत्रिक गाम : भपटियाही (नरहिया) जिला- मधुबनी
मातृक गाम : निर्भापुर (रामपट्टी) जिला- मधुबनी

शैक्षणिक योग्यता : स्नातक(गणित)मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा।
शैक्षणिक योग्यता : आई.टी. आई. (टर्नर)
जीविकोपार्जन : कृषि।

वर्त्तमान पता : ग्राम+पोस्ट- भपटियाही, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी, (बिहार), पिन- 847108

कृति : 1. सखारी-पेटारी (लघु कथा संग्रह), 2. छठिक डाला (कविता संग्रह) 3. बहिनपा (एकांकी संचयन), 4. मरजादक भोज (लघु कथा संग्रह), 5. हमर चारू धाम (काव्य संग्रह)

अन्य : मिथिला-मैथिलीक प्रमुख कथा गोष्ठी- 'सगर राति दीप जरय'क 83म आयोजन तथा नियमित सहभागिता।

सम्पर्क : 9931909671

(उपरोक्त पोथी सबहक e-version videha.co.in परसँ डानलॉड कएल जा सकैए।)

₹ 250

पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

9789388421836